श्वासों की सफलता

आज का मानव बहुत समझदार है। वह ऐसे कार्य में अपना धन निवेश करना चाहता है जहाँ एक पैसे से दो बन जाएँ अर्थात् मूलधन भी सुरक्षित रहे और कमाई भी होती रहे। इसके लिए विभिन्न लोगों से सलाह-मशवरा करता है, विभिन्न संचार माध्यमों से जानकारियाँ हासिल करता है और अधिकतम लाभ वाले उपक्रम को चुनकर उसी में धन लगाता है। लेकिन जिस नश्वर धन को बढ़ाने के लिए मानव इतना चिन्तित है, उससे भी बढ़कर एक अन्य धन उसके पास है, क्या उसके बारे में उसे कोई चिन्ता नहीं है? क्या उस तरफ उसका कोई ध्यान नहीं है? क्या उस धन को नष्ट होते देखकर भी वह यूँ ही हाथ पर हाथ धरे बैठा हुआ है? वह धन है श्वासों का धन। श्वास जो लाख कोशिश करने पर भी बढ़ाई नहीं जा सकती।

इतिहास में कहानी आती है एक राजा की। एक बार उसके मंत्री का प्रिय पुत्र बीमार पड़ गया। कई वैद्यों से इलाज कराने पर भी पुत्र ठीक नहीं हुआ। एक दिन मंत्री, दरबार में ही पुत्र की चिन्ता में निमग्न हो गया। राजा उसके चिन्तित चेहरे को देख द्रवित हो उठा और बोला, मुझसे जो माँगो मैं दूँगा पर चिन्ता की लकीरें तुम्हारे चेहरे पर मैं देख नहीं सकता। मंत्री ने धीरे से कहा, महाराज, मेरे पुत्र को श्वासों का दान दे दो, उसकी साँस लगभग उखड़ चुकी है, वह केवल कुछ घंटों का ही मेहमान है। राजा पीछे हट गया और अपना मुँह ऊपर की ओर करके विधाता को निहारने लगा।

योगबल से बढ़ते हैं श्वास

सच है, राजा हो या योद्धा, साँसों के आगे किसी का ज़ोर नहीं चलता, यह तो वह कीमती खज़ाना है जो योगबल से कुछ बढ़ाया जा सकता है पर भोगी तो इस खज़ाने को समय से पहले ही बर्बाद कर लेता है। हम अपने बारे में क्या विचार रखते हैं? हम भोगी हैं या कर्मयोगी? हम एक-एक श्वास में पुण्य की पूंजी अर्जित कर उसे आबाद कर रहे हैं या बिना पुण्य अर्जित किए मूलधन को भी नष्ट कर रहे हैं? याद रखिए, गया हुआ धन लौट सकता है परंतु गये हुए श्वास वापस आ नहीं सकते। गये सो गये, समाप्त हो गये, काल की भेंट चढ़ गये। इसलिए संभालिए अपने श्वासों को, लगाइये पुण्यों के अर्जन में।

पुण्य अर्जन के लिए, श्वासों को निवेश करने का कारगर उद्योग है ईश्वरीय स्मृति और ईश्वरीय ज्ञान का मनन। ज्ञान का एक-एक रत्न अरबों के बराबर है। यदि आप हर श्वास के साथ ज्ञान के रत्नों का मनन करते रहो तो आपकी आध्यात्मिक पूंजी कई गुणा हो जायेगी।

कार्य की गुणवत्ता कैसी है?

कई लोग कहते हैं, हम घर-परिवार के लिए कमा रहे हैं, सारा दिन व्यस्त रहते हैं, खाली तो बैठे नहीं हैं, आप सांस सफल करने की बात करते हैं, हमें तो सांस लेने की फुर्सत ही नहीं है।

सांस लेने की फुर्सत ना होना या सांसों को व्यर्थ गंवाना, दोनों ही अति के सूचक हैं। और फिर यह भी तो ज़रूरी है कि हम श्वास रोककर जिस कार्य को कर रहे हैं, उसकी गुणवत्ता कैसी है। यदि अधिक कमा भी लिया चोरी, हेराफेरी, बेईमानी, धोखाधड़ी से, किसी का अपमान करके, मिलावट करके, सरकार की आँखों में धूल झोंक कर, लूटमार करके, किसी की जेब काटकर, किसी को तंग करके, सीनाज़ोरी करके तो भी क्या हुआ? ऐसे धन का सदुपयोग तो होने से रहा। वह जाएगा क्लबों में, मदिरा में, जुए में, वेश्यावृत्ति और नाच-गाने में, घर के ऐशो-आराम में, यार-